मैथिली (प्रतिष्ठा)
बी० ए० (H) पार्ट - II
पेपर - III

डॉ० बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - [illegible]

1. वर्णरत्नाकर ग्रंथक विषय ओ स्वरूप :-

वर्णरत्नाकर सर्वथा एक विचित्र प्रकारक ग्रन्थ थिक। कोनहु भाषामे एहि ढंगक आन कोनो ग्रन्थ कदाचिते पाओल जाइत अछि। एहि पोथीक गणना ताहि वर्गक पोथी सभसँ कएल जा सकैत अछि जकरा कोनो वर्ग विशेषमे राखब सम्भव नहि अछि। ई कोन उद्देश्यसँ ओ ककरा हेतु लिखल गेल ताहि प्रसंग विद्वान-लोकनिमे बड़ मत-मतान्तर अछि।

म०म० हरप्रसाद शास्त्रीक मत छनि:-
वर्णरत्नाकरमे कवि-परिपाटी प्रतिपादित अछि अर्थात काव्यमे कोन वस्तुक वर्णन कोना करी, कविकेँ तकर मार्गदर्शन कराएब एकर उद्देश्य थिक।

वर्णरत्नाकरक प्रथम सम्पादक सुनीति-कुमार चटर्जीक कहब छनि -
वर्णरत्नाकर लौकिक ओ संस्कृत शब्द सभक एक प्रकारक कोश थिक, काव्यमे वर्णनीय विविध वस्तु ओ भाव-सभक प्रसिद्ध उपमा ओ वर्णन परिपाटीक संग्रह थिक।

शेष अगिला अंकमे-